भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 185
शुक्रवार, 21 जून, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

औसत तापमान

185. श्री निशिकांत दुबेः

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) देश में गत पांच वर्षों के दौरान रिकॉर्ड किया गया औसत तापमान कितना है;

(ख) क्या देश में बाकी दुनिया की तुलना में औसत तापमान में खतरनाक रूप से बढ़ती हुई प्रवृत्ति देखी गई है; और

(ग) यदि हां, तो सरकार द्वारा इस स्थिति से निपटने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जा रहे हैं?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(डॉ. हर्ष वर्धन)

(क) गत पांच वर्षों (2014 से 2018) के दौरान, समग्र रूप से, देश में औसत वार्षिक तापमान और उसकी विसंगतियों का ब्यौरा नीचे तालिका में दर्शाया गया है -:

वर्ष	वार्षिक औसत तापमान (सेल्सियस में)	दीर्घकालीन सामान्य तापमान की तुलना में वार्षिक तापमान में बदलाव (सेल्सियस में)
2014	25.73	+0.23
2015	25.92	+0.42
2016	26.20	+0.70
2017	26.04	+0.54
2018	25.90	+0.39

(ख) न्यूयॉर्क स्थित नासा के गोडार्ड इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस स्टडीज (जीआईएसएस) के वैज्ञानिकों के अनुसार, (1951 से 1980) दीर्घकालिक जलवायु सामान्य तापमान की तुलना में वर्ष 2018 में वैश्विक तापमान 0.83 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म था। विश्व स्तर पर, वर्ष 2018 के दौरान तापमान वर्ष 2016, 2017 और 2015 के तापमान की तुलना में कम है। पिछले पांच वर्ष, सामूहिक रूप से, आधुनिक रिकॉर्ड में सबसे गर्म वर्ष रहे हैं। उपरोक्त पांच वर्षों के दौरान दुनिया के सभी हिस्सों में गर्मी महसूस की गई है। यही प्रवृत्ति भारत में भी देखी गई है।

(ग) मानवजनित गतिविधियों (मानव प्रेरित), मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने, वनों की कटाई और परिवहन के परिणामस्वरूप, पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा है जिससे जलवायु परिवर्तन हो रहा है। इसकी वजह समुद्र के स्तर में वृद्धि, बर्फ और ग्लेशियरों के पिघलने, मौसम के पैटर्न में बदलाव, प्रतिकूल स्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति समेत व्यापक प्रभाव होते हैं। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दों, विशेष रूप से शमन और अनुकूलन के लिए नोडल मंत्रालय है। देश में जलवायु परिवर्तन के आकलन के लिए वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक क्षमता सृजित और सुदृढ़ करने के लिए, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के जलवायु परिवर्तन एक्शन प्रोग्राम (सीसीएपी) के तहत विभिन्न कार्य योजनाएं शुरू की गई हैं। कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी)
जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना (एसएपीसीसी)
जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (एनएएफसीसी)
जलवायु परिवर्तन एक्शन प्रोग्राम (सीसीएपी)

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार भारत के 2020 बाद के जलवायु संबंधी लक्ष्य इस प्रकार हैं:

2020 के बाद की अवधि के लिए, पार्टियों के सम्मेलन के निर्णयों के जवाब में, भारत ने 2 अक्टूबर, 2015 को यूएनएफसीसीसी को अपना राष्ट्रीय तौर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) प्रस्तुत किया जो पेरिस समझौते के तहत किए जाने वाले जलवायु कार्यों को रेखांकित करता है।

भारत द्वारा अपने एनडीसी में रखे गए आठ लक्ष्य इस प्रकार हैं:

1. संरक्षण और संयम की परंपराओं और मूल्यों पर आधारित जीवन की एक स्वस्थ और व्यवहार्य पद्धति को प्रस्तुत करना और उसका प्रचार करना।

2. आर्थिक विकास के अनुरूप स्तर पर दूसरों के द्वारा अब तक अपनाए गए मार्ग की तुलना में एक जलवायु अनुकूल और स्वच्छतर मार्ग अपनाना।

3. 2005 से 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन मात्रा को 33 से 35 प्रतिशत तक कम करना।

4. हरित जलवायु कोष (जीसीएफ) समेत कम लागत वाले अंतर्राष्ट्रीय वित्त और प्रौद्योगिकी के अंतरण की सहायता से 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी इलेक्ट्रिक पावर स्थापित क्षमता प्राप्त करना।

5. 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्ष आवरण के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड के अतिरिक्त कार्बन सिंक सृजित करना।

6. जलवायु परिवर्तन, विशेष रूप से कृषि, जल संसाधन, हिमालयी क्षेत्र, तटीय क्षेत्रों, स्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन के लिए संवेदनशील क्षेत्रों में विकास कार्यक्रमों में जलवायु परिवर्तन के अनुरूप निवेश करना।

7. अपेक्षित संसाधन और संसाधन अंतराल के मद्देनजर उपरोक्त शमन और अनुकूलन क्रियाओं को लागू करने के लिए विकसित देशों से घरेलू एवं नए और अतिरिक्त धन जुटाना।

8. भारत में अत्याधुनिक जलवायु प्रौद्योगिकी के त्वरित प्रसार करने और ऐसे भविष्य के लिए संयुक्त सहयोगात्मक अनुसंधान एवं विकास के लिए क्षमता का निर्माण एवं घरेलू ढांचा और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तैयार करना।

*****